माननीय प्रधानमंत्री के 12 साल बेमिसाल : सेवा, सुशासन, जनकल्याण

व्याख्यानमाला – पांचवॉ

वैदिक संस्कृति एवम विकसित भारत @ 2047

वक्ता

श्री श्री 1008 श्री महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी

श्री हनुमानगढ़ी अयोध्या

दिनांक 18 जून 2026 पुर्वाहन 11:00 बजे

कार्यक्रम संरक्षक एवं अध्यक्ष

आचार्य सत्यकाम जी

माननीय कुलपति

नोडल अधिकारी कार्यक्रम

प्रोफेसर संजय कुमार सिंह

भूगोल, समाज विज्ञान विद्‌याशाखा

आयोजक

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय

प्रयागराज

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj
12 साल बेमीसाल
12 UNPARALLELED YEARS
Trust, Development, Public Welfare
5 to 21 June 2026
Congratulations on successfully completing 12 Glorious and Unparalleled Years of Governance!
#12SaalBemisaal #ViksitBharat2047

उ0प्र0 राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

केन्द्र सरकार के 12 वर्ष : सेवा, सुशासन एवं जनकल्याण

व्याख्यानमाला – 2026

VIKSIT BHARAT

वैदिक संस्कृति एवं विकसित भारत @2047

दिनांक	समय	माध्यम
18 जून 2026 (वृहस्पतिवार)	पूर्वाह्न 11.00 बजे से	ऑनलाइन

संरक्षक एवं अध्यक्ष	मुख्य वक्ता	कार्यक्रम अधिकारी (नोडल)	धन्यवाद ज्ञापन	संचालन
आचार्य सत्यकाम	**श्री श्री 1008 श्रीमहंत**	**प्रो0 संजय कुमार सिंह**	**प्रो0 आनन्दानन्द त्रिपाठी**	**डॉ0 सुनील कुमार**
माननीय कुलपति उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज	महामंडलेश्वर ब्रह्मर्षि डॉ0स्वामी महेश योगी जी अयोध्या	भूगोल विभाग उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज	राजनीति विज्ञान विभाग उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज	प्राचीन इतिहास विभाग उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

zoom

ZOOM MEETING DETAILS

Meeting ID : 99914234939

Passcode : 1234

सूचना हेतु लिंक

https://chat.whatsapp.com/Gy6k50nNVjxAlccgnyVms6

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

7525048007

आप सभी का हार्दिक स्वागत है !

भारत प्रगति के पथ पर आपसी संस्कृति, परंपराओं की सजोकर आगे बढ़ रहा है।

आचार्य सत्यकाम जी

केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल के सूत्र वाक्य के स्थान केंद्र सरकार की उपलब्धियां योजनाओं की जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से माननिय कुलपति जी की प्रेरणा के फलस्वारुप उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा सात दिवस व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों के वाचिक स्वागत एवं विषय परिवर्तन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इसने मुख्य अतिथि मुख्य वक्ता के रूप में श्री श्री 1008 श्री महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी हनुमानगढ़ी अयोध्या रहें। उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि भारत देश संतो ऋषियो मुनियों तपस्वियों की नहीं बल्कि देव भूमि, योग एवं वैदिक संस्कृति के आधार पर भारत को विश्व गुरु बनाया जा सकता है स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत भूमि सर्च की भूमि, शेष रिसर्च की भूमि है। योगी जी ने भगवान राम के आदर्शों, कृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम, गुरु की चर्चा की कथा व्याख्या कीं। विश्वविद्यालय के साधक एव साधिकाए हनुमान जी के 64000 विद्या के जानकार हैं उनकी प्रेरणा लेकर आगे बढ़े, उनके आचरण को आत्मसात करें, माता–पिता, गुरु का सम्मान करें, संस्कार युक्त शिक्षा ग्रहण करें, ज्ञान, भक्ति, कर्म आदि वैदिक परंपरा का निर्माण करें, निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करें । उन्होंने सद्मार्ग युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, माता–पिता, गुरू की श्रेष्ठता तथा चरण वंदना आदि जैसे मूल संस्कारों की चर्चा कीं। उन्होंने योग चक्र, शरीर के ध्यान, पांच उंगलियों को विशिष्टता, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरुषार्थ, 16 संस्कार की चर्चा करते हुए स्किल डेवलपमेंट कैसे किया जाए इसके लिए हिरण कश्यप, एकलव्य आदि अनेक महापुरुषों का उदाहरण लेकर भारत को विश्व गुरु की संकल्पना को साकार करना हैं। ज्ञान व धर्म का संगम रावण के ज्ञान मार्ग, धर्म मार्ग का उल्लेख करते हुए अधर्म मार्ग विनाश का कारण बना को बताया। देश के नौजवानों को ज्ञान मार्ग के साथ धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरित किया। चेतना शक्ति की प्रबलता, तपोवन की वेब कनेक्टिविटी, टेलीपैथी आदि का विकसित भारत में कैसी मुमिका होगी, का उल्लेख कियां। उन्होंने अष्टांग योग बताए। मानव चेतना कैसे सैटेलाइट तक पहुंचती है इस तरह से सहीं नदि रूपि चेतना, जनसागर रूपी परम चेतना से जुड़ता है तो परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। वैदिक परंपरा में ज्ञान और धर्म का करूण संगम देखने को मिलता है। योगी जी ने माता–पिता को प्रथम गुरु बताया जो बच्चों की ब्लैन्क मेमोरी व उसके जीवन में बहुत महती प्रभाव पड़ता है। वैदिक परंपरा में विमानशास्त्र की चर्चा की गई, योगी जी ने बताया कि वैदिक परंपरा की मूल शक्ति योग है और इसी परंपरा पर चलकर शिक्षा प्राप्त करना चाहिए। विश्वविद्यालय में बच्चों के दो लक्ष्य होने चाहिए पहला लक्ष्य शिक्षा के साथ स्किल डेवलपमेंट और दूसरा लक्ष्य शिक्षा के साथ साधना होनी चाहिए। योग के द्वारा सप्त चक्रो कि साधना से ज्ञानोदय होता है। जब व्यक्ति विनम्रता के साथ आत्मिक चेतना को परम चेतना से जोड़ते हैं। वह चार पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं योगी जी ने आगे बताया कि भारत ऋषियों की परंपरा का वाहक बने। भारत स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती के विचारों पर चल कर पुनः विश्व गुरु बने। भारत भूमि हिंद महासागर से हिंदू कुश तक फैला है जिसको उसका मान विश्व में पुनः वापस प्राप्त करना है।

व्याख्यानमाला के अध्यक्ष उद्बोधन में कुल गुरु आचार्य सत्यकाम जी ने सर्वप्रथम सभी को बधाई दि, उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम भारत को विश्व गुरु बनाने की एक पृष्ठभूमि है । 12 साल बेमिसाल का यह मोदी जी का विजन एक महती कार्य है जिसमें भारत प्रगति के पथ आपसी संस्कृति परंपराओं परंपराओं की साजोकर आगे बढ़ रहा है। देश की संस्कृति और गरिमा के उत्थान के लिए इन 12 वर्षों में सतत कार्य किया गया है श्री श्री 1008 श्री महंत महामंण्डलेश्वर डा. स्वामी महेश योगी जी हनुमानगढी अयोध्या को विशेष आभार जताते हुए अपने शब्दों को विराम देते हुए कुल गुरु ने अपना उद्बोधन समाप्त किया।अंत में कार्यक्रम का समापन प्रोफेसर आनंदा नंद त्रिपाठी जी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर सुनील कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर प्राचीन इतिहास विभाग ने किया।

News Letter

मुक्त चिन्तन

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन 18 जून, 2026

मुक्त विश्वविद्यालय में 12 साल बेमिसाल पर व्याख्यानमाला का आयोजन

मुक्त विश्वविद्यालय में 12 साल बेमिसाल पर व्याख्यान माला का आयोजन

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में दिनांक 18 जून, 2026 को "वैदिक संस्कुति एवं विकसित भारत @2027" विषय पर एक प्रेरणादायी व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 श्री महंत महामंडलेश्वर, ब्रह्मर्षि डॉ0 स्वामी महेश योगी जी, श्री हनुमानगढ़ी पीठ, अयोध्या रहे तथा अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 सत्यकाम जी ने की।

प्रारंभ में कार्यक्रम का शुभारम्भ नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह द्वारा अतिथियों के वाचिक स्वागत एवं विषय–प्रस्तावना के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० सुनील कुमार एवं प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

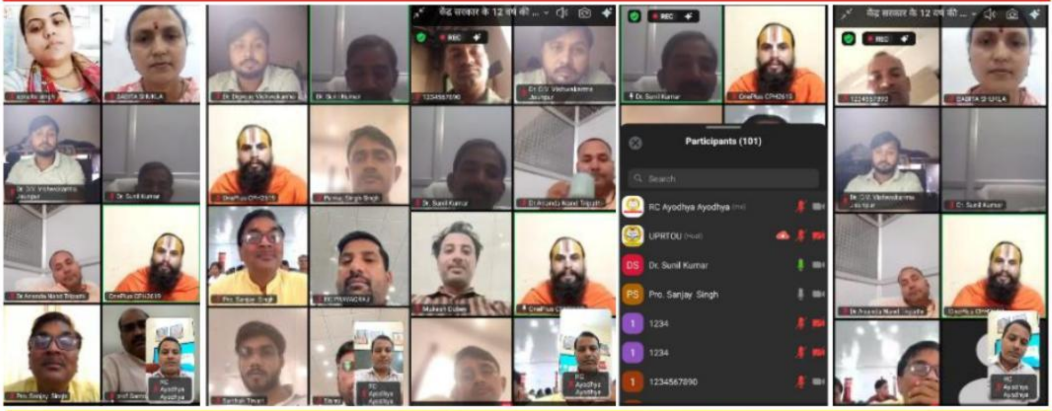

वेद, योग और संस्कारों के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है : महंत डॉ. स्वामी महेश योगी

अपने उद्बोधन में स्वामी महेश योगी जी ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु–भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता–पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।

स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। उन्होंने कौशल विकास को भारतीय परंपरा से जोड़ते हुए हिरण्यकश्यप, एकलव्य और अन्य महापुरुषों के उदाहरण प्रस्तुत किए तथा कहा कि ज्ञान और धर्म के संतुलन से ही राष्ट्र का कल्याण संभव है।

उन्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा, टेलीपैथी, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

स्वामी जी ने विद्यार्थियों को दो प्रमुख लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा दीकृपहला, शिक्षा के साथ कौशल विकास और दूसरा, शिक्षा के साथ साधना। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें।

भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है : –प्रोफेसर सत्यकाम

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम जी ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि 'भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।' पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।

कुलपति जी ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।

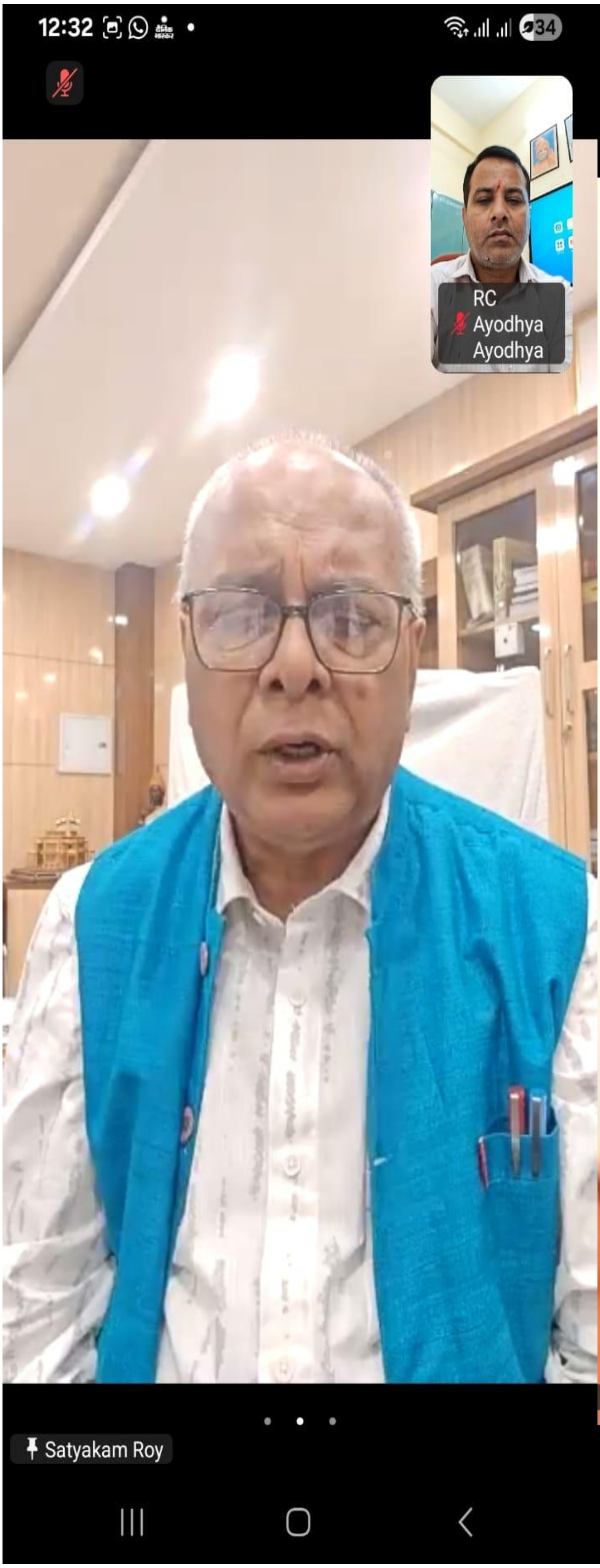
12:32
RC
Ayodhya
Ayodhya
Satyakam Roy

11:33
Jyotiraditya
Shukla
OnePlus CPH2619

11:13
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की उपलब्धि ...
REC
Jyotiraditya Shukla
Pro. Sanjay Singh
Unmute
Start video
Chat
Participants
More
Leave

12:33
RC Ayodhya Ayodhya
Dr.Ananda Nand Tripathi

BLOCK - D

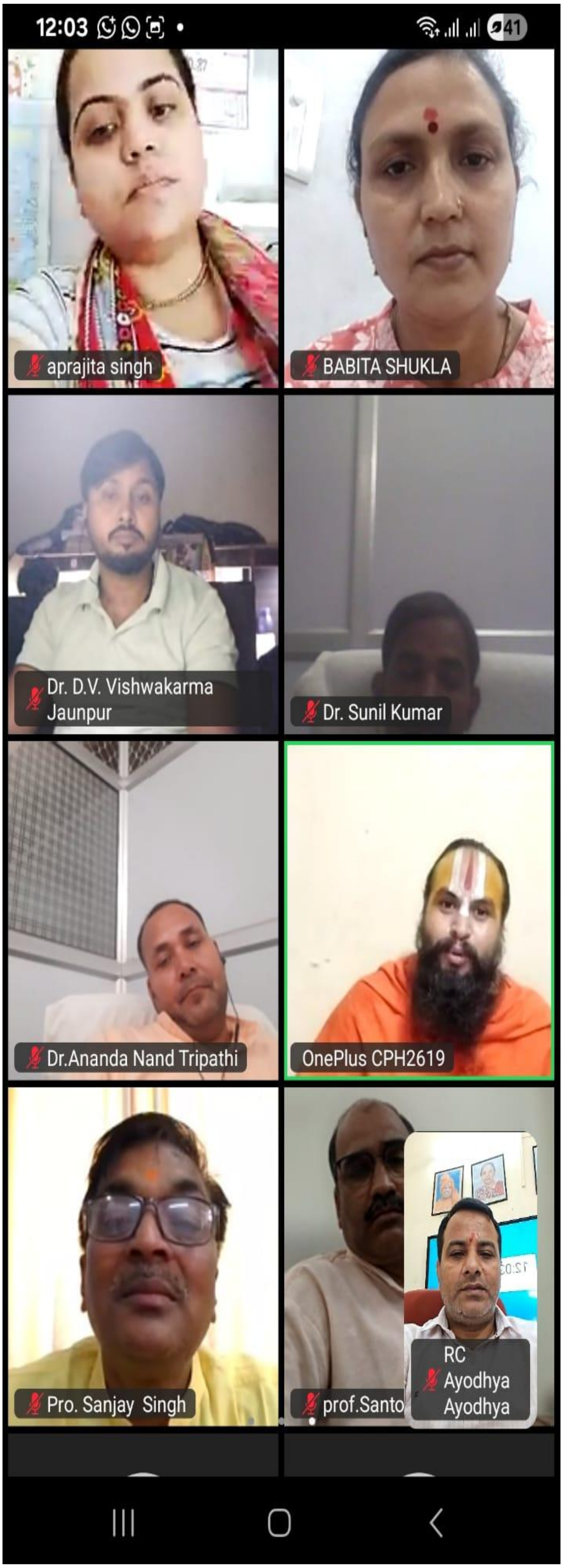
12:03
aprajita singh
BABITA SHUKLA
Dr. D.V. Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
OnePlus CPH2619
Pro. Sanjay Singh
prof.Santo
RC Ayodhya Ayodhya

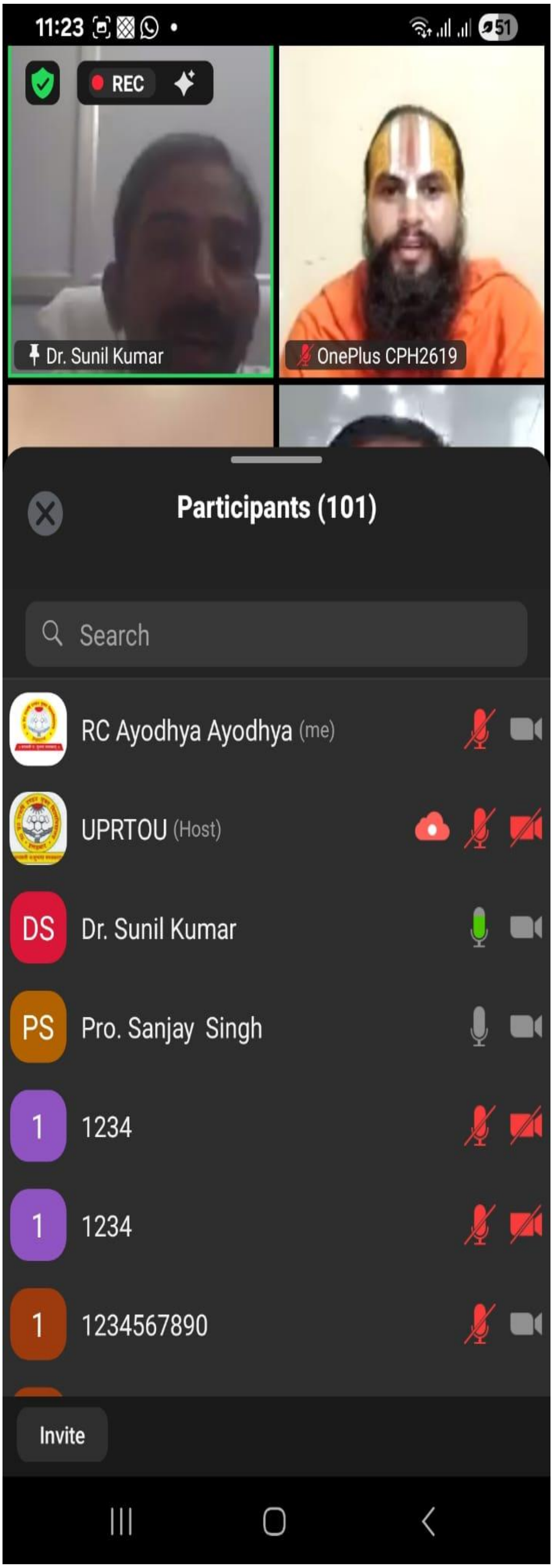
11:23
REC
Dr. Sunil Kumar
OnePlus CPH2619
Participants (101)
Search
RC Ayodhya Ayodhya (me)
UPRTOU (Host)
DS Dr. Sunil Kumar
PS Pro. Sanjay Singh
1 1234
1 1234
1 1234567890
Invite

11:34
49
Dr. Sunil Kumar
OnePlus CPH2619
Pankaj Singh Singh
Pro. Sanjay Singh
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
Satya prakash
Sishu
Vikash Kumar
1234
RC Ayodhya Ayodhya

12:39
32
Dr. D.V. Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kuma
RC Ayodhya Ayodhya
Dr.Ananda Nand Tripathi
Piyush Datt Mishra
Pro. Sanjay Singh
prof.Santosha kumar
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
S-2057 UDIT NARAYAN P. G. COLLEGE PADRAUNA KUSHINAGAR

12:33
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की ...
REC
Dr. D.V. Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
Pro. Sanjay Singh
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
S-2057 UDIT NARAYAN P. G. COLLEGE PADRAUNA KUSHINAGAR
RC Ayodhya Ayodhya
Sanjay Singh (research scholars, UPRTOU)
10
74
Unmute
Stop video
Chat
Participants
More
Leave

12:32
Dr.Ananda Nand Tripathi
OnePlus CPH2619
Pro. Sanjay Singh
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
S-2057 UDIT NARAYAN P. G. COLLEGE PADRAUNA KUSHINAGAR
Sanjay Singh (research scholars, UPRTOU)
Satyakam Roy
1234
RC Ayodhya Ayodhya

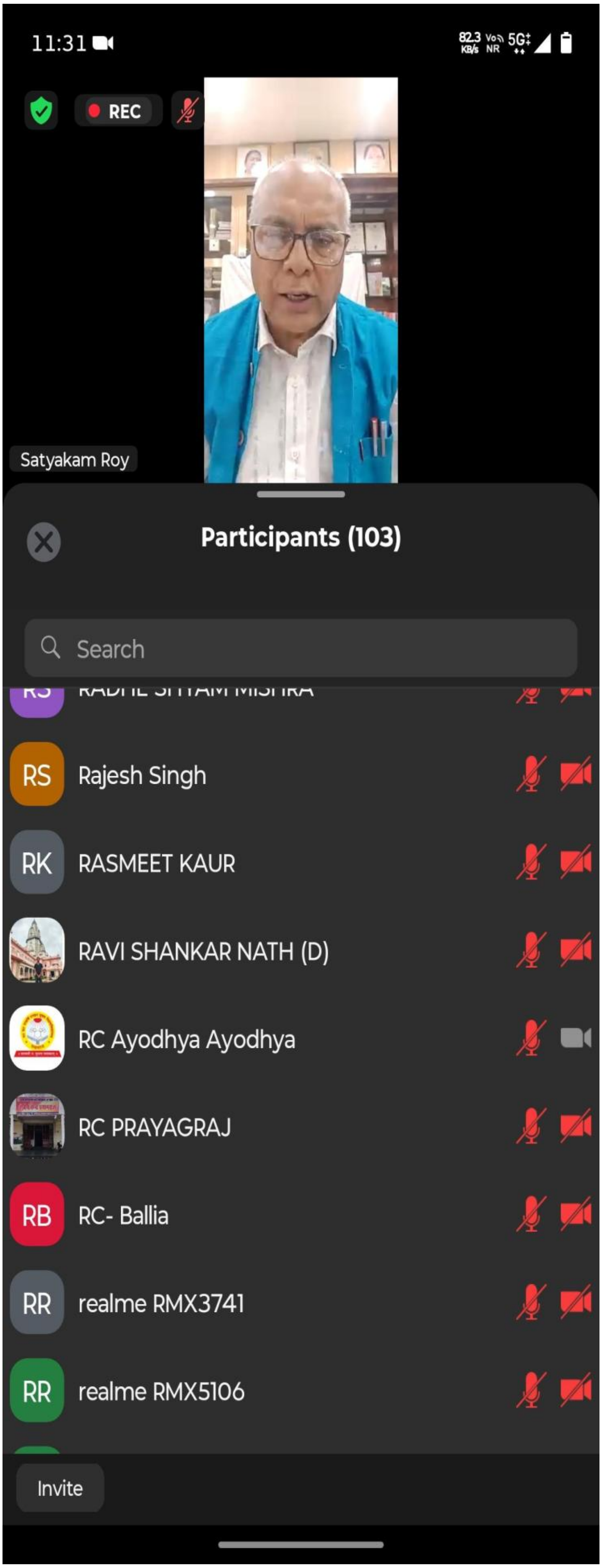
11:31
REC
Satyakam Roy
Participants (103)
Search
Rajesh Singh
RASMEET KAUR
RAVI SHANKAR NATH (D)
RC Ayodhya Ayodhya
RC PRAYAGRAJ
RC- Ballia
realme RMX3741
realme RMX5106
Invite

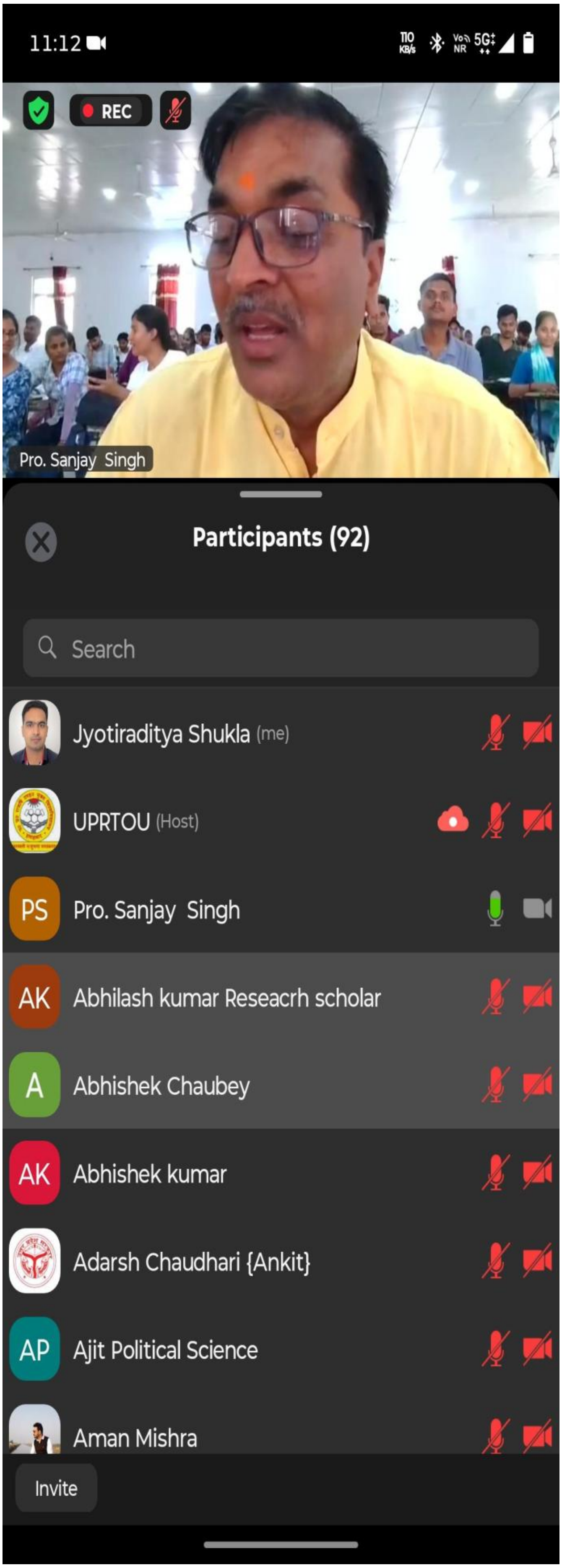
11:12
REC
Pro. Sanjay Singh
Participants (92)
Search
Jyotiraditya Shukla (me)
UPRTOU (Host)
Pro. Sanjay Singh
Abhilash kumar Reseacrh scholar
Abhishek Chaubey
Abhishek kumar
Adarsh Chaudhari {Ankit}
Ajit Political Science
Aman Mishra
Invite

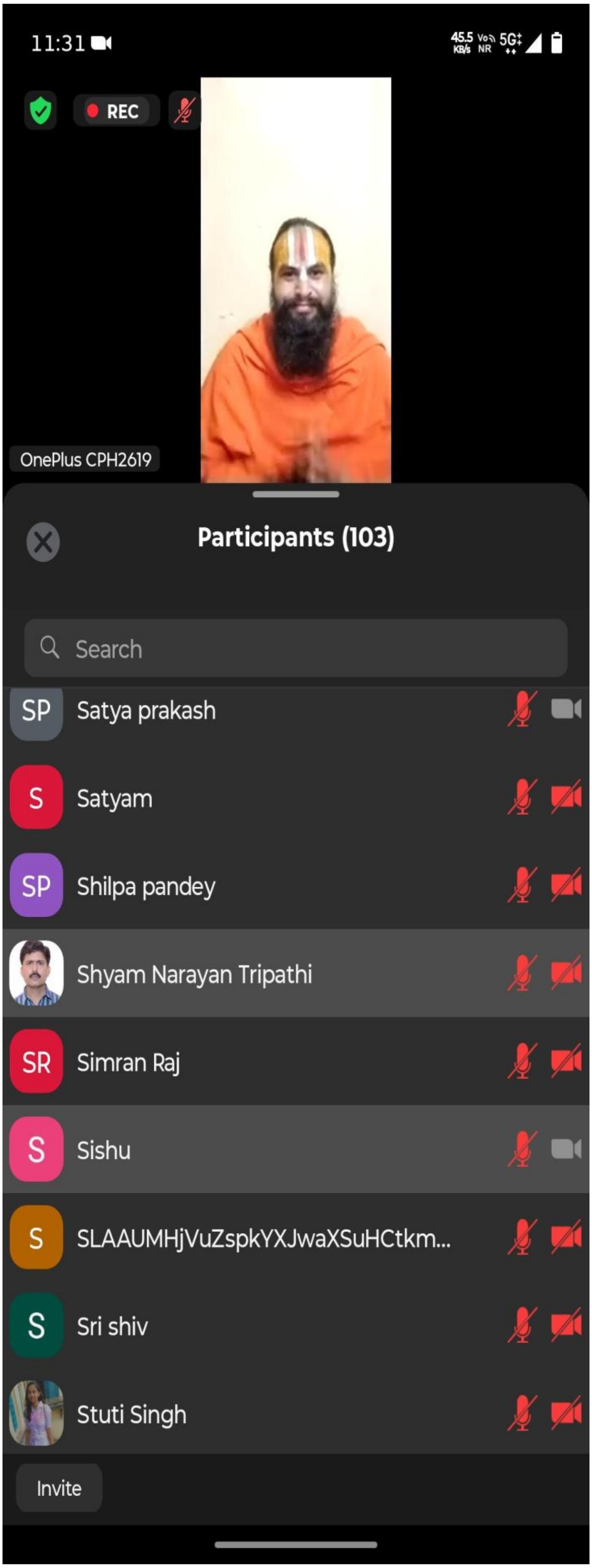
11:31
REC
OnePlus CPH2619
Participants (103)
Search
Satya prakash
Satyam
Shilpa pandey
Shyam Narayan Tripathi
Simran Raj
Sishu
SLAAUMHjVuZspkYXJwaXSuHCtkm...
Sri shiv
Stuti Singh
Invite

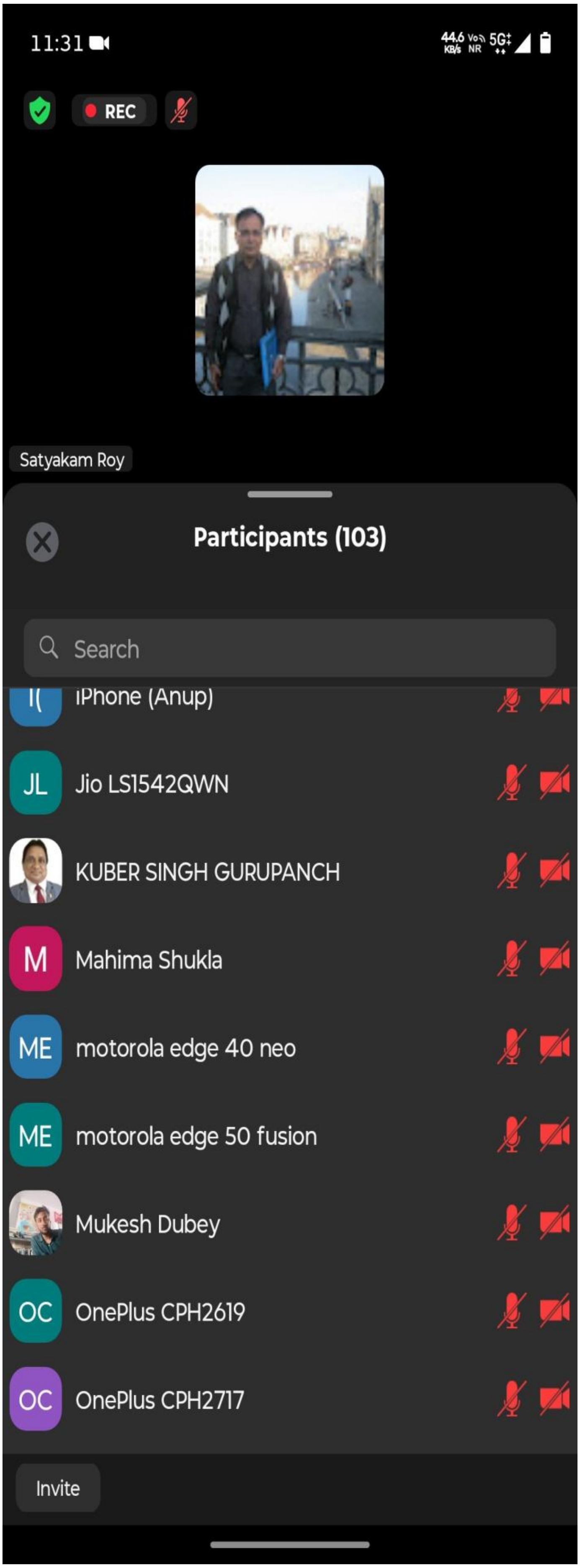
11:31
REC
Satyakam Roy
Participants (103)
Search
iPhone (Anup)
Jio LS1542QWN
KUBER SINGH GURUPANCH
Mahima Shukla
motorola edge 40 neo
motorola edge 50 fusion
Mukesh Dubey
OnePlus CPH2619
OnePlus CPH2717
Invite

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत-स्वामी महेश योगी

संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश-प्रोफेसर सत्यकाम

मंत्र भारत संवाददाता

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणादायी व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी, अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु-भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। उन्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा, टेलीपैथी, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत एवं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया। डॉ मिश्र ने बताया कि व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना है, ताकि वे ज्ञान, कौशल और संस्कार से युक्त होकर विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत : स्वामी महेश योगी

❑ संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश : प्रो. सत्यकाम

आनंदी मेल ब्यूरो

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणादायी व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी, अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु-भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है। स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। उन्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा,

टेलीपैथी, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं। जनसंपर्क अधिकारी डॉ.प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत एवं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत – स्वामी महेश योगी

प्रयागराज।। प्रयाग प्रभात न्यूज

प्रयागराज, 18 जून केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में
चालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन
क विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला
क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणा दायी व्याख्यान का ऑनलाइन
योजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री
08 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी,
योध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों,
षियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और
नातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान
प्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि
जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।
न्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान,
राक्रम और गुरु–भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके
वन–मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि
ता– पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म
ा समन्वय ही
क्ति को श्रेष्ठ
गरिक बनाता
।स्वामी जी ने
वाओं में ऊर्जा,
रुषार्थ, अनुशासन
ं चरित्र निर्माण
ी आवश्यकता
र बल देते हुए ध
, अर्थ, काम और
क्ष रुपी चार

रुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया।
न्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा, टेलीपैथी, अष्टांग योग,
प्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी
स्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम
हीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे
रम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना
र सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता
। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि
यानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने
योगदान दें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्व विद्यालय के
लपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को
श्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा
 भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे
ढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और
ष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया
।कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी
हेश योगी जी का विश्व विद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त
रते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से
ड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं। जनसंपर्क अधि
ारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत
ं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत
। संचालन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य,प्राचीन इतिहास विभाग
तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया। डॉ मिश्र ने
ाया कि व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक
तना और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना है, ताकि वे ज्ञान, कौशल और
स्कार से युक्त होकर विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा
कें। कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं
पलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, अध
त्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था।इस
वसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं
ड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत -स्वामी महेश योगी

संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश-प्रोफेसर सत्यकाम

लक्ष्य समग्र/संवाददाता

प्रयागराज- केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणादायी व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी,अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं,बल्कि संतों,ऋषियों,मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है।योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है।उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु-भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया।उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा,ज्ञान,भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा,पुरुषार्थ,अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया।उन्होंने चेतना शक्ति,तपोवन की वैज्ञानिक

परंपरा,टेलीपैथी,अष्टांग योग सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं,बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है।उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है।उन्होंने कहा कि भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा,विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत एवं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत की।संचालन डॉ सुनील कुमार,सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया।डॉ मिश्र ने बताया कि व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव,सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना है,ताकि वे ज्ञान,कौशल और संस्कार से युक्त होकर विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सकें।कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति,अध्यात्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था।इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी,कर्मचारी,शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत – स्वामी महेश योगी

संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश- प्रोफेसर सत्यकाम

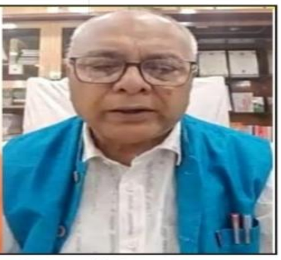

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणादायी व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी, अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु-भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।स्वामी जी ने युवाओं में ऊर्जा, पुरुषार्थ, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। उन्होंने चेतना शक्ति, तपोवन की वैज्ञानिक परंपरा, टेलीपैथी, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, आध्यात्मिक चेतना और सतत प्रयास से ही व्यक्ति जीवन के चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दें।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है।कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत एवं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया। डॉ मिश्र ने बताया कि व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना है, ताकि वे ज्ञान, कौशल और संस्कार से युक्त होकर विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करना था।इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत : स्वामी महेश योगी

❑ **संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश : प्रो. सत्यकाम**

परफेक्ट मिशन

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में गुरुवार को सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में एक प्रेरणादायी ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। उन्होंने कहा कि योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुन: विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। स्वामी महेश योगी ने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहां ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण और हनुमान जी के आदर्शों का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण करता है। उन्होंने युवाओं में अनुशासन, ऊर्जा, पुरुषार्थ और चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। साथ ही चेतना शक्ति, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे व्यक्ति परम ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि देश अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखते हुए विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले 12 वर्षों में सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। उन्होंने मुख्य वक्ता के प्रति विश्वविद्यालय परिवार की ओर से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करेंगे। जनसंपर्क अधिकारी डॉ. प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नोडल अधिकारी प्रो. संजय सिंह के स्वागत एवं विषय प्रवर्तन से हुआ। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. आनन्दानंद त्रिपाठी ने दिया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने सहभागिता की। व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का विकास करते हुए उन्हें विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है।

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत- स्वामी महेश योगी

संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश– प्रोफेसर सत्यकाम

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में बृहस्पतिवार को एक प्रेरणादायी व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी, अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहाँ ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उन्होंने भगवान श्रीराम के आदर्शों, श्रीकृष्ण के योग, हनुमान जी के ज्ञान, पराक्रम और गुरु-भक्ति का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि भारत प्रगति के पथ पर अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा है।पिछले 12 वर्षों में देश की सांस्कृतिक गरिमा, विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर कार्य किया गया है। कुलपति ने मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी का विश्वविद्यालय परिवार की ओर से विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने वाले हैं।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत एवं विषय की प्रस्तावना नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आनन्दानंद त्रिपाठी ने किया। डॉ मिश्र ने बताया कि व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना है, ताकि वे ज्ञान, कौशल और संस्कार से युक्त होकर विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सकें।

India Will Become a Global Leader Through Yoga and Vedic Knowledge – Swami Mahesh Yogi

The Nation is Progressing While Preserving Its Culture and Traditions – Prof. Satyakam

HIND MATA

Prayagraj: As part of the lecture series being organized to commemorate the completion of 12 years of the Central Government, Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj, conducted an inspiring online lecture on Thursday under its seven-day lecture series.

The Chief Guest and keynote speaker, Shri Shri 1008 Mahant Mahamandaleshwar Dr. Swami Mahesh Yogi Ji Maharaj of Hanumangarhi, Ayodhya, stated that India is not merely a geographical entity but a sacred land of saints, sages, seers, and spiritual practitioners. He emphasized that India can regain its status as a global leader through the strength of Yoga, Vedic knowledge, and Sanatan culture. He described India as a land of both discovery and research, where knowledge and spirituality exist in remarkable harmony.

Referring to the ideals of Lord Rama, the Yoga teachings of Lord Krishna, and the wisdom, valor, and devotion of Lord Hanuman, he urged students to imbibe these life values. He said that respect for parents and teachers,

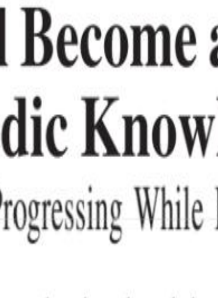

value-based education, and the integration of knowledge, devotion, and action are essential for becoming responsible and exemplary citizens.

Swami Ji highlighted the importance of energy, determination, discipline, and character building among youth. He elaborated on the four Purusharthas—Dharma (righteousness), Artha (prosperity), Kama (desire), and Moksha (liberation)—as well as the significance of the sixteen sacraments (Shodasha Samskaras) of Indian culture. He also spoke extensively on consciousness, the scientific tradition of Tapovan, telepathy, Ashtanga Yoga, the practice of the seven chakras, and the development of human consciousness. According to him, Yoga is not merely physical exercise but a means of connecting individual consciousness with universal consciousness, leading to the attainment of supreme knowledge.

He further stated that humility, spiritual awareness, and continuous effort enable individuals to achieve all four Purusharthas. Encouraging the youth, he called upon them to draw inspiration from the thoughts of Swami Vivekananda and Maharshi Dayananda Saraswati and contribute to making India a global leader once again.

Presiding over the program, Vice-Chancellor Prof. Satyakam remarked that the lecture series is an important intellectual initiative toward making India a global leader. He noted that India is advancing while preserving its culture and traditions. Over the past 12 years, continuous efforts have been made to protect and promote the nation's cultural heritage, dignity, and national consciousness.

On behalf of the university community, the Vice-Chancellor expressed special gratitude to Shri Shri 1008 Mahant Mahamandaleshwar Dr. Swami Mahesh Yogi Ji for his insightful address, stating that his ideas would inspire the younger generation to connect with Indian values and contribute to nation-building.

Public Relations Officer Dr. Prabhat Chandra Mishra informed that the guests were welcomed and the introductory remarks on the theme were presented by Nodal Officer Prof. Sanjay Singh. The program was moderated by Dr. Sunil Kumar, Assistant Professor, Department of Ancient History, while the vote of thanks was delivered by Prof. Anand Anand Tripathi.

Dr. Mishra further stated that the objective of the lecture series is to foster patriotism, cultural awareness, and moral values among students so that they may actively contribute to the development of a prosperous India with knowledge, skills, and strong values.

India Will Become a Global Leader Through Yoga and Vedic Knowledge – Swami Mahesh Yogi

The Nation is Progressing While Preserving Its Culture and Traditions – Prof. Satyakam

JE CORRESPONDENT

Prayagraj: As part of the lecture series being organized to commemorate the completion of 12 years of the Central Government, Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj, conducted an inspiring online lecture on Thursday under its seven-day lecture series.

The Chief Guest and keynote speaker, Shri Shri 1008 Mahant Mahamandaleshwar Dr. Swami Mahesh Yogi Ji Maharaj of Hanumangarhi, Ayodhya, stated that India is not merely a geographical entity but a sacred land of saints, sages, seers, and spiritual practitioners. He emphasized that India can regain its status as a global leader through the strength of Yoga, Vedic knowledge, and Sanatan culture. He described India as a land of both discovery and research, where knowledge and spirituality exist in remarkable harmony.

Referring to the ideals of Lord Rama, the Yoga teachings of Lord Krishna, and the wisdom, valor, and devotion of Lord Hanuman, he urged students to imbibe these life values. He said that respect for parents and teachers,

value-based education, and the integration of knowledge, devotion, and action are essential for becoming responsible and exemplary citizens.

Swami Ji highlighted the importance of energy, determination, discipline, and character building among youth. He elaborated on the four Purusharthas—Dharma (righteousness), Artha (prosperity), Kama (desire), and Moksha (liberation)—as well as the significance of the sixteen sacraments (Shodasha Samskaras) of Indian culture. He also spoke extensively on consciousness, the scientific tradition of Tapovan, telepathy, Ashtanga Yoga, the practice of the seven chakras, and the development of human consciousness. According to him, Yoga is not merely physical exercise but a means of connecting individual consciousness with universal consciousness, leading to the attainment of supreme knowledge.

He further stated that humility, spiritual awareness, and continuous effort enable individuals to achieve all four Purusharthas. Encouraging the youth, he called upon them to draw inspiration from the thoughts of Swami Vivekananda and Maharshi Dayananda Saraswati and contribute to making India a global leader once again.

Presiding over the program, Vice-Chancellor Prof. Satyakam remarked that the lecture series is an important intellectual initiative toward making India a global leader. He noted that India is advancing while preserving its culture and traditions. Over the past 12 years, continuous efforts have been made to protect and promote the nation's cultural heritage, dignity, and national consciousness.

On behalf of the university community, the Vice-Chancellor expressed special gratitude to Shri Shri 1008 Mahant Mahamandaleshwar Dr. Swami Mahesh Yogi Ji for his insightful address, stating that his ideas would inspire the younger generation to connect with Indian values and contribute to nation-building.

Public Relations Officer Dr. Prabhat Chandra Mishra informed that the guests were welcomed and the introductory remarks on the theme were presented by Nodal Officer Prof. Sanjay Singh. The program was moderated by Dr. Sunil Kumar, Assistant Professor, Department of Ancient History, while the vote of thanks was delivered by Prof. Anand Anand Tripathi.

Dr. Mishra further stated that the objective of the lecture series is to foster patriotism, cultural awareness, and moral values among students so that they may actively contribute to the development of a prosperous India with knowledge, skills, and strong values.

योग और वैदिक ज्ञान से ही विश्वगुरु बनेगा भारत : स्वामी महेश योगी

❑ संस्कृति और परंपराओं को संजोकर आगे बढ़ रहा देश : प्रो. सत्यकाम

परफेक्ट मिशन

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में गुरुवार को सात दिवसीय व्याख्यानमाला के क्रम में एक प्रेरणादायी ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 महंत महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी महेश योगी जी महाराज, हनुमानगढ़ी अयोध्या ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संतों, ऋषियों और तपस्वियों की पुण्यभूमि है। उन्होंने कहा कि योग, वैदिक ज्ञान और सनातन संस्कृति की शक्ति के आधार पर ही भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है। स्वामी महेश योगी ने कहा कि भारत खोज और शोध दोनों की भूमि है, जहां ज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण और हनुमान जी के आदर्शों का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से उनके जीवन मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का सम्मान, संस्कारयुक्त शिक्षा, ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय ही श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण करता है। उन्होंने युवाओं में अनुशासन, ऊर्जा, पुरुषार्थ और चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थों तथा भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का महत्व बताया। साथ ही चेतना शक्ति, अष्टांग योग, सप्त चक्रों की साधना तथा मानव चेतना के विकास जैसे विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मचेतना को परमचेतना से जोड़ने का माध्यम है, जिससे व्यक्ति परम ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि यह व्याख्यानमाला भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पहल है। उन्होंने कहा कि देश अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखते हुए विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले 12 वर्षों में सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। उन्होंने मुख्य वक्ता के प्रति विश्वविद्यालय परिवार की ओर से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके विचार नई पीढ़ी को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करेंगे। जनसंपर्क अधिकारी डॉ. प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नोडल अधिकारी प्रो. संजय सिंह के स्वागत एवं विषय प्रवर्तन से हुआ। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. आनन्दानंद त्रिपाठी ने दिया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने सहभागिता की। व्याख्यानमाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का विकास करते हुए उन्हें विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है।